VISION IAS

www.visionias.in

VISION IAS M N 12 SEP 2023 No. 3 RECEIVED

ESSAY

Name of Candidate	Ishwar lal Gurjar.							Test Code	2321		
Medium Hindi/Eng.	Hindi	Registration Number		1	2	9	5	8	1	8	
Centre	MN	Date	1	2	0	9	2	0	2	3	

INDEX TABLE

Section	Maximum Marks	Marks Obtained
A	125	
B	125	
Total Marks Obtained:		

Important Instructions

1. The ESSAY must be written in the medium authorized in the Admission Certificate which must be stated clearly on the cover of this Question-cum-Answer (QCA) Booklet in the space provided. No marks will be given for answers written in a medium other than the authorized one.

   प्रवेश–पत्र में प्राधिकृत माध्यम में **निबन्ध** लिखना आवश्यक है तथा इस माध्यम का स्पष्ट उल्लेख प्रश्न–सह–उत्तर (क्यू.सी.ए.) पुस्तिका के मुखपृष्ठ पर निर्दिष्ट स्थान पर करना आवष्यक है। प्राधिकृत माध्यम के अलावा अन्य माध्यम में लिखे गए उत्तरों पर अंक नहीं दिए जाएंगे।

2. Word limit, as specified, should be adhered to.

   प्रश्नों के उत्तर निर्दिष्ट शब्द–संख्या के अनुसार होने चाहिए।

3. Any page or portion of the page left blank in the Question-cum-Answer Booklet must be clearly struck off.

   प्रष्न–सह–उत्तर पुस्तिका में खाली छोड़े गए किसी पृष्ठ अथवा पृष्ठ भाग को पूर्णतः काट दीजिए।

Remarks:

General Instructions

1. Do furnish the appropriate details in the answer sheet (viz. Name, Registration Number and Test Code).

   उत्तर पुस्तिका में सूचनाएं भरना आवष्यक है (नाम, प्रश्न–पत्र कोड, विद्यार्थी क्रमांक इत्यादि)।

2. Write **two** essay, choosing **one** topic from each of the Sections A and B, in about 1000-1200 words each.

   खण्ड A व B प्रत्येक से **एक** विषय चुनकर **दो** निबन्ध लिखिए, जो प्रत्येक लगभग 1000–2000 शब्दों का हो।

3. Do not write answers in bad of illegible handwriting. Such answer may not be evaluated.

   उत्तर अस्पष्ट अथवा गन्दी लिखावट में न लिखें। इस प्रकार के उत्तरों का मूल्यांकन नहीं भी किया जा सकता है।

4. Write answers in ink only. Do not use pencil for writing the answer. However, pencil may be used for drawing diagrams, sketches, etc.

   उत्तर स्याही से ही लिखें। उत्तर लिखने के लिए पेंसिल का उपयोग न करें। हालांकि आरेख, चित्र इत्यादि बनाने के लिए पेंसिल का उपयोग किया जा सकता है।

5. Do not write answers in a medium other than the authorized medium in the Admission Certificate. Do not use mixed language, i.e., authorized and unauthorized media together, for writing answers.

   प्रवेश–पत्र में उल्लेख किए गए माध्यम के अलावा अन्य किसी माध्यम में उत्तर न लिखें। अधिकृत और अनधिकृत की मिली–जुली भाषा का भी उपयोग न करें।

6. Write answers at the specified spaces (right below the questions) only. Answers written elsewhere at unspecified spaces in the Booklet shall not be evaluated.

   प्रश्नों के उत्तर ठीक उसके नीचे दिए गए निर्धारित स्थान पर ही लिखें निर्धारित स्थान के अलावा किसी अन्य स्थान पर लिखे गए उत्तर का मूल्यांकन नहीं किया जाएगा।

Is student recommended for One-to-One mentoring?

Recommended	Strongly Recommended

Students must not write on this page.

उम्मीदवारों को इस पृष्ठ पर नहीं लिखना चाहिए।

EVALUATION INDICATORS

1. **Contextual Competence**
2. **Structure and Flow**
3. **Dimensional Coverage**
4. **Language Competence**
5. **Length of Essays**
6. **Creativity Competence**

Overall Macro Comments / feedback / suggestions on Answer Booklet:

Students must not write on this page.
उम्मीदवारों को इस पृष्ठ पर नहीं लिखना चाहिए।

Evaluation Parameters

- **Understanding of Topic**
- **Introduction Competence**
- **Body of Essay**
  - **Dimensions Covered**
  - **Shortcomings**
  - **Value Additions/ Missed Dimensions**
- **Conclusion Competence**
- **Organization of Essay**
- **Language and Expression**

Macro Comments – Essay 1

Essay Topic:

Students must not write on this page.
उम्मीदवारों को इस पृष्ठ पर नहीं लिखना चाहिए।

Students must not write on this page.

उम्मीदवारों को इस पृष्ठ पर नहीं लिखना चाहिए।

Students must not write on this page.
उम्मीदवारों को इस पृष्ठ पर नहीं लिखना चाहिए।

Macro Comments – Essay 2

Essay Topic:

Students must not write on this page.
उम्मीदवारों को इस पृष्ठ पर नहीं लिखना चाहिए।

Students must not write on this page.

उम्मीदवारों को इस पृष्ठ पर नहीं लिखना चाहिए।

All the Best

खण्ड–A / SECTION–A

1. यदि आप दुनिया में बदलाव की आकांक्षा रखते हैं, तो आपको दुनिया से अलग दिखना होगा।

"कुछ वो लोग जो वक्त के साँचों में ढल गए
कुछ वे जो वक्त के साँचे ही बदल गए"

इन पंक्तियों में कवि ने दो तरह के व्यक्तियों की बात कही है। पहले वे है जो भीड़ का हिस्सा बन गए। समाज की बनी-बनाई मान्यताओं, धारणाओं और रूढ़ियों को बिना जाने-परखे स्वीकार कर लेने वाले व्यक्तित्व हीन लोग पूरा जीवन लकीर का फकीर बनकर काट देते हैं। इनके अपने स्वप्न समाज द्वारा थोपे होते है। इनकी अपनी कोई महत्वकांक्षा नहीं होती है और अगर होती भी है तो केवल जीवन निर्वाह, भौतिक सुखों की प्राप्ति तक ही सीमित होती हैं। 'सुकरात' ने ऐसे जीवन के बारे में कहा है कि–

"एक अपरीक्षित जीवन जीने योग्य नहीं होता।"

दूसरी तरफ़ वे लोग होते है जो लकीर का फकीर बनने की बजाय नए रास्तों की

तलाश करते है। स्वप्न बुनते है और अपने सामर्थ्य से उसे आकार भी करते है। इनके हाथ असहमतियों में उठते है। ये गलत को गलत और सही को सही कहने का साहस रखते है। धारा के प्रवाह के विपरीत तैरकर पूरे समाज को एक नई दिशा दे जाते है। ऐसे ही लोगों के लिए 'हरिवंश राय बच्चन' ने लिखा है कि-

वह पथ क्या पथिक कुशलता क्या।
~~जब धाराएँ ही प्रतिकूल ना हो,~~
~~नाविक~~ जिस पथ पर बिखरे शूल ना हो,
नाविक की धैर्य परीक्षा क्या,
जब धाराएँ ही प्रतिकूल ना हो।।

प्रश्न केवल दुनिया से अलग दिखने का ही नहीं बल्कि अलग रचने का भी है। भीड़ से अलग तो न जाने कितने दिखते है लेकिन कुछ ही होते है जिनके पास महत्वकांक्षा होती है। जो समाज को पलटकर देखने पर मजबूर कर देते है। दुनिया की बनी बनाई

Don't write anything this margin
(इस भाग में कुछ ना लिखें)

रीति और नीति से विद्रोह करने वाले तो कई हुए है लेकिन जो मानवता को अधिक सुन्दर बनाये और संस्कृतियों को नई दशा व दिशा दे वही इतिहास में अपनी जगह बना पाते है।

फ्रांस की क्रांति का पुत्र कहे जाने वाले 'नेपोलियन बोनापार्ट' ने कहा है कि- "बड़ी महत्वकांक्षा महान चरित्र का जुनून होती है। जो इससे सम्पन्न है वह या तो बहुत अच्छा या बहुत बुरा कर सकते है। ये सब उन मूल्यों पर निर्भर करता है जिनसे वे निर्देशित होते है" यह और बात है कि 'नेपोलियन' स्वयं इन शब्दों पर खरा नहीं उतर सका। फ्रांसीसी क्रांति को भटकाने और तानाशाह बन जाने वाले नेपोलियन ने उन अधिकांश तानाशाहों की तरह ही शासन किया जिसके उदाहरण मान्य मानव सभ्यता में भरे पड़े है।

दुनिया से अलग दिखने का खुमार हिटलर और मुसोलिनी को भी था लेकिन

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

उन्होंने नफ़रत और घृणा के सिवाय मानवता को कुछ नहीं दिया।

इसलिए प्रश्न दुनिया से अलग दिखने का नहीं है बल्कि अपने अलग नज़रिये से, नई सोच से, नए प्रयासों से जीवन में कुछ ऐसा कर जाना कि जिससे आने वाली पीढ़ियाँ प्रेरणा लेती रहे। और हम पाते है कि ऐसे लोग जीवन के हर क्षेत्र में हुए है जिन्होंने चुनौतियों से बड़ी चुनौतियां, अभावों से बड़े अभावों में भी जीवन को एक नया अर्थ दिया।

अमेरिका के पूर्व राष्ट्रपति 'अब्राहम लिंकन' का जीवन साधारण परिस्थितियों में ही गुजरा लेकिन उनकी आकांक्षा असाधारण थी। उन्होंने अश्वेतों को दासता से मुक्ति दिलाने और लोकतंत्र को अधिक मजबूत बनाने के लिए अपना सम्पूर्ण जीवन समर्पित किया। उन्होंने जीवन की सार्थकता को

लेकर कहा भी है कि-

"महत्वपूर्ण यह नहीं की आपके जीवन में कितने साल बचे है। बल्कि उन बचे हुए वर्षों में कितना जीवन बचा है।"

'महात्मा गाँधी' ने भारतीय स्वतंत्रता संग्राम को नरमपंथी नेताओं की निष्क्रियता और गरमपंथी नेताओं के अतिवाद से बचाते हुए सत्य और अहिंसा के सत्याग्रही मार्ग की और अग्रसर किया। आज 'सविनय अवज्ञा' राजनीतिक आन्दोलनों का सबसे बड़ा हथियार बन गया है। जिससे प्रेरणा लेकर "नेल्सन मंडेला' ने दक्षिण अफ्रीका को रंगभेद की गुलामी से मुक्त कराया तो 'मार्टिन लूथर किंग जुनियर' ने अमेरिका में 'सिविल राइट मूवमेंट' द्वारा नागरिक सुधारों की अलख जगाई।

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

इतिहास में जाने कितने ही योद्धा, शासक और तानाशाह हुए है लेकिन 'सम्राट-अशोक' जैसी प्रसिद्धी किसी और की नहीं है। 'अशोक' की महानता युद्ध-नीति की वजह से नहीं है बल्कि धम्म-नीति के कारण है। उन्होंने प्रजा के हित में, प्राणी मात्र के कल्याण हेतु युद्ध की नीति के त्याग का अविस्मरणीय उदाहरण प्रस्तुत किया।

लोकतंत्र और गणतंत्र का पहला विचार ग्रिक दार्शनिक 'सुकरात' ने दिया था लेकिन तात्कालिक समाज ने 'सुकरात' की प्रगतिशीलता और दूरदृष्टि की सराहना करने की बजाय उन्हें मृत्युदण्ड की सज़ा दी। लेकिन इससे 'सुकरात' के विचार मर नहीं गई। कहा भी जाता है कि- "उस प्याले में ज़हर था ही नहीं वरना सुकरात कब का मर गया होता"

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

लीक से हटकर चलने वालों को समाज आसानी से स्वीकार नहीं करता है। 'सुकरात' के विचार समाज को ललकारते थे; झंकझोरते थे; परिवर्तन के लिए तैयार करते थे लेकिन कभी-कभी समाजों को अपनी जड़ता, अधिक प्रिय होती है।

मध्यकालीन यूरोप में रूढ़िवाद और अंधविश्वास की इसी जड़ता ने सम्पूर्ण समाज को जकड़ रखा था। जिन लोगों ने इस अंधकार का विरोध किया उन्हें चर्च और सामंती व्यवस्था ने कुचल दिया। लेकिन गैलिलियो कॉपरनिकस, केप्लर और न्यूटन जैसे वैज्ञानिकों और मार्टिन लूथर, कॉल्विन, इरेसमस, मैकियावेली को यह स्वीकार न था। उन्होंने पुनर्जागरण की अलख जगाकर यूरोप को आधुनिकता का प्रकाश प्रदान किया।

भारत में यही काम 19वीं सदी में राजा राम मोहन रॉय, दयानंद सरस्वती ज्योतिबा फुले व विवेकानंद ने किया।

यूरोप का धर्म सुधार, रेनेसा, औद्योगिक क्रांति और भारत का सामाजिक-सुधार आन्दोलन दुनिया में बदलाव की आकांक्षा का स्वप्न देखने वाले मुट्ठी भर लोगों का ही परिणाम है।

'पाब्लो नेरूदा' अपनी कविता - 'you start daying slowly' में लिखते है कि - 'आप धीरे- धीरे मरने लगते है।
जबकरते नहीं कोई यात्रा
जब रचते नहीं कोई संगीत"

यही बात पंजाबी के सूफी कवि- 'बाबा फरीद' भी अपने गीतों में कहते है- "उठ फरीदा सुता तु दुनिया वेखण जा
जो कोई मिल जाय बख्शिया
ते तू वी बख्शिया जा
उड़िया उड़िया जा फरीदा उड़िया उड़िया जा"

कहने का तात्पर्य यह है कि जीवन में आगा हाकर, अपने स्वप्न और

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

आकांक्षाओं को पुरा करने वाले लोग ही नई राहों की खोज करते है। फिर चाहे वो नई दुनिया की खोज करने वाला नाविक- 'क्रिस्टोफर कोलोम्बस' हो या भारतीय उप-महाद्वीप पर पहुंचने वाला वास्कोडिगामा।

दुनिया से अलग दिखने और सोचने वाले लोग हमारे दैनिक संसार में हमारे आस-पास भी होते है। एक चाय बचेने वाली माँ ने अपनी बेटी 'मीराबाई चानू' को ओलम्पिक के पोडियम तक पहुंचाया है तो नाखित जरीन, मैरीकॉम ने घर की चार-दिवारी पर होसलों की खील ठोककर दिवारों को फाँद दिया। 'सचिन तेंदुलकर' ने कहा है कि - "लोग आप पर पत्थर फेंकते है तो आप उन्हे मील के पत्थर में बदल दो"

लोक प्रशासन में बदलाव की मानसिकता से प्रेरित लोक सेवको ने अपनी

समर्पण की भावना से कई मील के पत्थर स्थापित किए हैं। 'आर्मस्ट्रांग पोमे' ने वित्त की कमी का बहाना बनाकर जिम्मेदारियों से पल्ला झाड़ने की बजाय क्राउड फंडिंग द्वारा धन जुटाकर 100km पीपुल्स रोड का निर्माण कर दिया।

'डॉ. सुमित शर्मा (IAS)' ने जेनरिक दवाओं के क्षेत्र में क्रांति लाने का काम किया तो 'प्रकाश सिंह' (IPS) ने पुलिस सुधारों के क्षेत्र में लम्बी कानूनी लड़ाई लड़ी। डॉ. वर्गीज कुरियन की श्वेत क्रांति हो या 'एम. एस. स्वामिनाथन' की हरित क्रांति हो या फिर कैलाश सत्यार्थी का बचपन बचाओ आन्दोलन हो सबने समाज को सकारात्मक रूप से बदलने का प्रयास किया।

पर्यावरण संरक्षण के क्षेत्र में 'ग्रेटा थनबर्ग' ने वैश्विक नेताओं को ललकारते हुए अपने स्पीच "हाउ डेयर यू" में एक

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

अलग संदेश देने का प्रयास किया है कि- "यह पृथ्वी हमे अपने पूर्वजों से उत्तराधिकार में नहीं मिली है बल्कि हमने अपने बच्चों से उधार ली है"

भारत में यही काम जादव पायेंग (फॉरेस्ट मैन ऑफ इंडिया) ने अपने दम पर 550 हेक्टर का जंगल लगाकर किया है तो तुलसी गौड ने 30 हजार पेड़ लगाकर किया है। विजय जरधारी, राहीबाई सोमा, राजेन्द्र सिंह जैसे पर्यावरण कार्यकर्ताओं ने अपनी अलग सोच के कारण ही दुनिया को पर्यावरण केन्द्रित विकास के लिए प्रेरित किया है।

परिवर्तन के लिए यह जरूरी है कि आप अपने समाज और समय से आगे सोचे। साहित्य में कवि को नई समानान्तर दुनिया का स्रष्टा कहा जाता है। जहाँ वह अपने सपनों की

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

दुनिया रचता है जो समाज को भी प्रेरणा देती है। प्रेमचन्द के उपन्यासों में, रवीन्द्रनाथ ठाकुर की कविताओं में और शेक्सपीयर के नाटकों में उसी परिवर्तन की दुनिया का वर्णन है। जहाँ तक मानवता को जाना है।

हर देश को भी परिवर्तन की आकांक्षा के लिए तैयार रहना चाहिए। भारत का अमृतकाल (2047) का स्वप्न और विश्व का 'एजेंडा 2030' (सतत विकास लक्ष्य) उसी की बानगी है। परिवर्तन सृष्टि का अटल सत्य है इसलिए जो समाज, राष्ट्र और व्यक्ति इसे स्वीकार करता है वही प्रगति की नई ऊँचाइयाँ भी छूता है।

"इसलिए यदि आप उड़ नहीं सकते तो दौड़ो, दौड़ नहीं सकते तो चलो, चल भी नहीं सकते तो रेंगो लेकिन रुको नहीं क्योंकि रुकना मौत है।"

⑤ जीवन ठहराव और गति के बीच संतुलन है।

"नया जनम ही जग पाता है
मरण मूढ़ सा रह जाता है॥
सृष्टा बड़ा सदय है
जीवन की ही जय है॥"

मैथिलीशरण गुप्त की यह काव्य पंक्तियाँ जीवन में गति और परिवर्तन के महत्व को बताती है। जीवन गतिमान है, जो ठहरा हुआ है वो निर्जीव है। यह ठहराव लम्बे समय में जड़ता, रूढ़ियां और कुरीतियां का स्वरूप ले लेता है। ऐसे में समाज, राष्ट्र और व्यक्ति जड़ व रूढ़िवादी बन सकते है।

गति और परिवर्तन द्वारा जड़ता को तोड़ा जा सकता है। राष्ट्र के जीवन को नया रूप दिया जा सकता है। नए

का स्वागत किया जा सकता है। समाज में प्रगतिशीलता, खुलापन और नवाचार को बढ़ावा दिया जा सकता है।

लेकिन केवल गति से ही काम नहीं चलता। समाज और जीवन में ठहराव का भी अपना महत्व है। इस निबंध में यही समझने का प्रयास करते है कि आखिर ठहराव और गति के बीच संतुलन का क्या महत्व है? और क्या हमेशा संतुलन बनाना ही एकमात्र उपाय होता है?

'महात्मा बुद्ध' ने जीवन को 'मध्यम मार्ग' बताते हुए कहा है कि "वीणा के तारों को इतना ढीला भी ना छोड़ो की उनसे संगीत ही उत्पन्न ना हो और उतना भी ना कसा जाए कि तार टूट ही जाए"

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

यही बात ग्रीक दार्शनिक 'अरस्तु' ने अपनी 'सद्गुण नीतिशास्त्रीय व्याख्या' में भी कही है। अरस्तु के अनुसार सद्गुण केवल 'स्वर्णिम मध्य मार्ग' है। दो अतिवादी गुणों के बीच का मध्य मार्ग ही सद्गुण है। 'कायरता' और 'क्रूरता' के मध्य 'साहस' एक सद्गुण है। 'भोग' और 'वैराग्य' के मध्य 'संयम' सद्गुण है।

हम सब ~~पात~~ अपने जीवन में पाते है कि ठहराव और गति दोनों ही सामान्य जीवन के लिए जरूरी होती है। और इसे जीवन के अलग- अलग अंशों में देखा जा सकता है।

पश्चिमी समाज एक लम्बे समय तक जड़ता की स्थिति में रहा। चर्च और

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

धर्म का आंतक इतना गहरा था कि समाज में किसी नए विचार, नई व्यवस्था, नई नीति की कोई जगह नहीं थी। मध्यकालीन यूरोपीय समाज एक ठहरा हुआ समाज है। जिसमें कोई बदलाव नहीं होता है। कोई आकांक्षा, स्वप्न नहीं है। यह यथास्थितिवादी समाज है जो आदिम अंधविश्वासों, कुरीतियों और बासी मान्यताओं से ग्रस्त समाज था।

पुर्नजागरण और कालान्तर में धर्म सुधार, औद्योगिक क्रांति ने इस जड़ हो चुके समाज को गति दी। विज्ञान की प्रगति, भौतिकवाद, आधुनिकता ने मनुष्य के जीवन को गतिशील किया।

समय की गति तेज हुई और प्रौद्योगिकी बदलावों ने इसे इतना तीव्र किया कि आधुनिक मनुष्य अपना

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

संतुलन खोता जा रहा है। 'डॉ० युआल नोआ हरारी' ने अपनी किताब -"21th lesson for 21th century" में लिखा है कि जैव प्रौद्योगिकी, सूचना प्रौद्योगिकी, क्वांटम कम्प्यूटर जैसी तकनीकों ने मनुष्य के लिए "मृत्यु को एक तकनीकी समस्या बना दिया है।" अर्थात अमरता को हासिल करने से मानवता बस चंद कदम की ही दूरी पर है।

इतनी तेजी से बदलती इस गतिशील दुनिया ने मनुष्य के जीवन को अप्रासंगिक बना दिया है। आज संघर्ष में मरने से ज्यादा खतरा आत्महत्या से मरने का है। अकेलापन, अवसाद, तनाव भावनात्मक शून्यता की स्थिति से आधुनिक मनुष्य पीड़ित है। आज हम भगवान की बनाई चीजों का इस्तेमाल कर रहे है और मनुष्य की बनाई वस्तुओं से प्रेम कर रहे है-

किसी कवि ने कहा भी है कि-
'चाँद है जेरे कदम, सूरज खिलौना हो गया
हाँ मगर इस दौर में किरदार बौना हो गया'।

भागदौड़ भरी जिन्दगी के कारण आपसी अलगाव, स्वार्थवाद, व्यक्तिवाद बढ़ा है। धन ही जीवन की सफलता का मानक हो गया है और चरित्र गौण हो चुका है। ऐसे में ठहराव और स्थायीत्व की तलाश में लोग आध्यात्म, योग की शरण में पुनः आ रहे हैं।

[जीवन] संतुलन में है। यह हम दैनिक जीवन में भी देखते हैं। संयम पूर्ण, सादगीपूर्ण जीवन रोगों से और तनावों से बचा रहता है। वहीं भोग, विलासिता, भौतिक संग्रह के कारण जीवन एकआयामी बन जाता है।

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

'प्रसाद' ने ऐसे ही विडंबनापूर्ण जीवन के दौर में कामायनी में लिखा भी है कि-

"ज्ञान दूर कुछ क्रिया भिन्न है
इच्छा क्यों पूरी हो जीवन की
एक दूसरे से न मिल सके
यही विडंबना है जीवन की"

इसे व्यापक स्तर पर देखे तो हम पाते है कि ठहरा हुआ समाज उसी तरह सड़ जाता है जैसे गढ़े में रुका हुआ पानी सड़ता है। लेकिन अपने मूल से कटकर विकास और प्रगति की अंधी दौड़ में भागने वाला समाज भी खुशहाली प्राप्त नहीं कर सकता।

भारतीय समाज में ठहराव एक लम्बे समय तक समाज को कुपमंडुक

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

बनार रखा। सती प्रथा, बाल विवाह, घुंघट प्रथा, निरक्षरता, अंधविश्वास जैसी कुरीतियां समाज में व्याप्त रही लेकिन समाज ने 20 वी सदी में गति पकडी और आज आधुनिकता के साथ परम्परा का; भौतिकता के साथ आध्यात्म का प्रकृति के साथ प्रगति का संतुलन स्थापित करने मे सफल रहा है।

भारत ने आजादी के बाद लोकतंत्र, पंथनिरपेक्षता, स्वतंत्रता के मौलिक अधिकारों को अपनाकर सदियों की जड़ता को प्रगतिशील संविधान द्वारा तोड दिया। वही पाकिस्तान ने मध्यकालिन मान्यताओं व प्रणालियों से चिपका रहा इसलिए संतुलन के अभाव में आज पाकिस्तान एक fail state है।

Don't write anything this margin
(इस भाग में कुछ ना लिखें)

भारत के संविधान में भी कार्यपालिका, न्यायपालिका व विधायिका में संतुलन है। "चेक एंड बलैंस" है। नागरिकों को मौलिक अधिकार भी दिए हैं तो नागरिक कर्तव्य भी है। अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता और जीवन का अधिकार भी है तो युक्तियुक्त निर्बंधन भी है।

यही संतुलन भारत के राष्ट्रीय जीवन में भी दिखता है। भारत ने भाषायी, धार्मिक, नस्लीय और क्षेत्रीय संतुलन स्थापित किया है।

कोरिया प्रायद्वीप पर एक साथ बने दो नवोदित राष्ट्रों ने अलग-अलग राह पकडी। उत्तरी-कोरिया ने जड़ता, ठहराव और स्थिरता को अधिक महत्व दिया तो दक्षिण-कोरिया ने प्रगति,

Don't write anything this margin
(इस भाग में कुछ ना लिखें)

संतुलन को अधिक महत्व दिया। आज दक्षिण-कोरिया हर मानक में विकसित है उत्तर-कोरिया हर क्षेत्र में पिछड़ा देश है।

पर्यावरण और विकास में संतुलन न बना पाने के कारण ही आज जलवायु परिवर्तन, ग्लोबल वार्मिंग, चरम मौसमी घटनाओं, प्रदूषण और प्राकृतिक आपदाओं की बढ़ती बारम्बारता के कारण विकास और प्रगति पर वैश्विक खतरा मंडरा रहा है।

भारत ने Life मिशन और पंचामृत पहल, वन हेल्थ एप्रोच, स्मार्ट एग्रीकल्चर जैसी पहल द्वारा संतुलन बनाने का प्रयास कर रहा है तो वहीं दूसरी तरफ वैश्विक स्तर पर UNFCCC, UNEP जैसे संगठन प्राकृतिक, जलवायुवीय संतुलन का

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

प्रयास कर रहे है।

राजनीतिक जीवन में ठहराव द्वारा चुनावी सुधारों को टालना, गतिशील लोकतंत्र में बाहुबल, धन बल के प्रयोग को रोकने के लिए सुधारों की गतिशीलता जरूरी हो जाती है। महिला आरक्षण विधेयक, पारित कर व राजनीतिक दलों में आंतरिक लोकतंत्र की स्थापना के लिए दलों को RTI के दायरे में लाकर राजनीतिक जीवन में संतुलन का प्रयास करना चाहिए।

जीवन नदी के दो किनारों पर नहीं है और ना ही पहाड़ों को काट देने वाली धाराओं में है। जीवन प्रवाहमान उस सरिता में है जहाँ भौतिक -आध्यात्म का संतुलन हो और

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

समाज में स्त्री-पुरुष में समानता हो; समावेशी विकास हो जहाँ कोई इतना गरीब ना हो की स्वंय को बेचने पर मजबूर हो जाये और कोई इतना अमीर ना हो कि दूसरों की जिन्दगी ही खरीद ले।

संतुलन धारणीय विकास और ग्लोबल गवर्नेंस में भी होना चाहिए। एक संतुलन व्यक्ति की बुद्धि और भावना में भी हो कि मनुष्य संवेदना और भावनात्मकता से भरा हुआ रहे न कि कम्प्यूटर की भाँति सूचनाओं से।

अतः ठहराव और गति के मध्य संतुलन ही एक अनुकरणीय जीवन बनाता है। जैसे

SPACE FOR ROUGH WORK

SPACE FOR ROUGH WORK

दुनिया में बदलाव की आकांक्षा

1) खेल जगत - सचिन (पत्थर से जिसने पत्थर)
विश्वविजेता (game of sexes)
- मोहम्मद अली (चैंपियन की)
- नरेन्द्र जडेजा
- मीराबाई चानू

2) विज्ञान
→ आइंस्टीन
- थॉमस अल्वा एडिसन
- स्टीफन हॉकिंग
- APJ अब्दुल कलाम
चन्द्रयान-3

3) राजनीति
- अब्राहम लिंकन
- मार्टिन लूथर किंग जूनियर
→ महात्मा गांधी
- सत्य
- अहिंसा

4) इतिहास
- महान चरित्र (नेपोलियन) बड़ी महत्वकांक्षा
→ अशोक (सब को जीता)
→ अकबर (दीन ए इलाही)
→

3-नियम
- अलग सोचना होगा
- भीड़ चाल नहीं
- लकीर का फकीर
- जोखिम लेना
- नए रास्ते तलाशना
(वॉल्ट डिज़्नी
की लंबी
मार्क ज़ुकर)

भीड़ से अलग
- गैलीलियो
- कॉपरनिकस
- कोलंबस
- डार्विन
(बंदरों से आए)
- कार्ल मार्क्स
- सिगमंड फ्रायड

- (सुकरात) जहर का
- अम्बेडकर / सामाजिक स्वतंत्रता
- ज्योतिबा फुले
- सावित्री बाई फुले
- नानक

5) अंतर्राष्ट्रीय
- भूटान (हैप्पीनेस इंडेक्स)
→ इज़राइल

6) नैतिकता
→ राम - कृष्ण
- पैगंबर - ईसा
सुकरात / भीड़ ने
भक्त कवियों (कबीर तेरा मेरा मनवा क्यू
मीरा
रैदास

7) साहित्य

y- सैर कर दुनिया की गाफ़िल
y- कूप में बंद दुनिया बदलो
में बदलकर देखो

y- कुछ पल कर भी उठा लिया कर
आज जगा सवेरे
उस जग से बढ़ कर भी

y- कहा यह भाग जो हो यहाँ के साँसें
कि जिन मानव बने
y- ... यहाँ नहीं
सालों में लिंकन

y- वह पथ क्या पथिक कुशलता क्या
y- जिस दिन में जान लेगी वह
आँधी हमारे बस में नहीं

... तुम ... के समाज पर
... का पहला उठान
... में ... में

SPACE FOR ROUGH WORK

- समय से आगे देखना
- नया स्वप्न देना
- नई दृष्टि
- नया विचार
- नई सोच

- अच्छा स्वप्न देना कुछ
ऐसा जो मानवता को और
सुन्दर बनाए।

- सपना को अनुरूप
- डॉक्टर, जो कुर्बानी देना ...
- गलत को गलत कह सके
- मुस्कुरा सके, लड़ सके
और माफ कर सके

- आगमन / चिन्तन से काम नहीं
- कई बार अपराधी / आंतकवादी ...
- सकारात्मक बदलाव के अर्थ में
कर्मों से आगमन चिन्तना
(समाज को महान
समाज को बदलना, परमाणु युग का
मिशन ही व्यक्ति अपने आप
- दुष्यन्त कुमार ने फरमाया है कि
- you must become the change
you want to see
उदाहरण हो भावी / मनोरथ

-> जिन्दगी क्या है एक जादू का
↳ जीना जन्म (तीनों के बाद रैन की जुगाल में जिन्दगी जाया न करेंगे।

you start dying slowly में पाब्लो नेरुदा लिखते हैं कि आप धीरे-धीरे मरने लगते हैं करते नहीं कोई यात्रा रखते नहीं कोई संगीत

- वक्त के साँचों में ढल जाते हैं। समाज/ परिवार मोह में उलझा, भीड़
जो कुछ मान्यताओं, धारणाओं, फैसलों को ढोते हुए लकीर पर चल पड़ते हैं। स्नेह ओशिवस ने कहा है जिन्दगी रूपी किताब का एक पन्ना ही पलट पाते हैं।

ग

एक तरफ - असहमति में हाथ
- कुछ होते हैं जो भीड़ को नकारते हैं, समाज को पलटकर देखने पर मजबूर कर देते हैं। व्यक्तित्व होता है।

SPACE FOR ROUGH WORK

③ जीवन ठहराव और गति के बीच का संतुलन है।

जीवन — ठहराव — गति

संतुलन

जीवन
- मानवीय
- समाज
- राष्ट्र
- दुनिया

ठहराव
- विराम
- आराम
- निष्क्रियता
- जड़ता
- स्थिरता
- स्थायित्व

गति
- विकास
- संघर्ष
- तरक्की
- प्रगति
- समय की कमी
- केवल आर्थिक
- केवल वैज्ञानिक
- only Development

संतुलन
- मूल से जुड़ना
- आधुनिक - रूढ़ियाँ
- प्राचीन - नवाचीन
- नए - पुराने
- पुत्र - पिता
- विज्ञान - आध्यात्म
- भौतिकवाद - भावना
- बुद्धि - भावना
- व्यक्ति - समाज

विज्ञान (मानवता विहीन विज्ञान)

सामाजिक (मुबारक)

राजनीति (भारत-पा, चुनाव सुधार)
- अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता

इतिहास
- अतिवादी
- जड़ राजा
- अभिजात्यवाद और क्रांति

भूगोल
- ब्रह्माण्ड
- पृथ्वी गतिशील

व्यक्तिगत
- प्रसाद आनंदवाद
- जुबैन हैबरमास
- लेविजिनेवन क्राइसिस

→ ज्योतिबा फुले, आर्यभट्ट, अम्बेडकर

केवल ठहराव
- जड़ता, रूढ़ियाँ
- सड़ जाता
- बासी हो

केवल गति
- भौतिक विकास (पश्चिम)
- संघर्ष की बजाय आलस
- हर तरफ हर जगह
- सीने में जलन आँखों
- दौड़ हैं जरे कदम

ध- जिस विचार के आने का समय (ह्यूगो) आप उसे रोक नहीं सकते तो डोरी

नया जन्म ही जग जाता है मरण मूक सा रह जाता है।

चलना-चलना रे राही चलना रे रुकने का नाम मौत है चलना है जिन्दगी

- उठ फरीदा सूता दुनिया देखण जा

- भारत की Economy.
- नार्डिक मॉडल
- सकारात्मक पंथनिरपेक्षता (भारत - PAK) (उत्तर कोरिया - दक्षिण कोरिया)
- जापान
  - संस्कृति
  - विकास
- नेहरू एक प्राचीन सभ्यता को आधुनिक राष्ट्र
- भारतीय संविधान
- भारतीय समाज